**Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences** ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 6.831
Volume - 7, Issue - 05, May - 2024

DOIs:10.2018/SS/202405009 --:-- Research Paper / Article / Review

# भरतमुनि नाट्यशास्त्र का एक व्यापक विश्लेषण

**मंजू सैनी**

सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग
शहीद उधम सिंह राजकीय महाविद्यालय, मटक माजरी (इंद्री) करनाल, हरियाणा

Email - manjusam444@gmail.com

**शोध -आलेख सार :** भारतीय नाट्य के इतिहास में नाट्यशास्त्र सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान रखता है । विश्व नाट्य साहित्य में जितने भी ग्रंथ उपलब्ध हैं , उनमें यह सबसे प्राचीन और सर्वोत्तम है । नाट्यशास्त्र के अनुसार, इसके प्रवक्ता ब्रह्म है और इसके प्रयोक्ता भरतमुनि है । देवताओं की प्रार्थना से ब्रह्मा जी ने चारों वेदों से सामग्री लेकर नाट्यवेद की रचना की और ब्रह्मा के उपदेश से भरत मुनि ने अपने राजपुत्रों के साथ नाट्य का प्रयोग किया । नाट्यशास्त्र को भारतीय शास्त्रीय कलाओं के मूलभूत ग्रंथों में से एक माना जाता है, जो मंच डिजाइन, श्रृंगार, मुद्राओं, रस आदि भावनाओं, संगीत और नाटकीय प्रस्तुतियों की संरचना सहित प्रदर्शन के विभिन्न पहलुओं में व्यापक अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। इसमें 36 अध्याय हैं; जिसमें नाट्य मंडप के प्रकार, नाट्याचार्य के प्राथमिक कर्तव्य, नाट्य- प्रदर्शन के पूर्व किए जाने वाले नांदी योजना आदि, सौंदर्यशास्त्र, सिद्धांत और अभिनय कला के अभ्यास से संबंधित विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है।

**मुख्य-शब्द :** नाट्याचार्य, सौंदर्यशास्त्र, प्रयोक्ता, सांस्कृतिक परिवेश, छंदोविचिति, व्यभिचारी भाव।

## 1. प्रस्तावना:

भारतीय नाट्य के इतिहास में नाट्यशास्त्र सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान रखता है । विश्व नाट्य साहित्य में जितने भी ग्रंथ उपलब्ध हैं , उनमें यह सबसे प्राचीन और सर्वोत्तम है । नाट्यशास्त्र के अनुसार, इसके प्रवक्ता ब्रह्म है और इसके प्रयोक्ता भरतमुनि है । देवताओं की प्रार्थना से ब्रह्मा जी ने चारों वेदों से सामग्री लेकर नाट्यवेद की रचना की और ब्रह्मा के उपदेश से भरत मुनि ने अपने राजपुत्रों के साथ नाट्य का प्रयोग किया । नाट्यशास्त्र को भारतीय शास्त्रीय कलाओं के मूलभूत ग्रंथों में से एक माना जाता है, जो मंच डिजाइन, श्रृंगार, मुद्राओं, रस आदि भावनाओं, संगीत और नाटकीय प्रस्तुतियों की संरचना सहित प्रदर्शन के विभिन्न पहलुओं में व्यापक अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। इसमें 36 अध्याय हैं; जिसमें नाट्य मंडप के प्रकार, नाट्याचार्य के प्राथमिक कर्तव्य, नाट्य- प्रदर्शन के पूर्व किए जाने वाले नांदी योजना आदि, सौंदर्यशास्त्र, सिद्धांत और अभिनय कला के अभ्यास से संबंधित विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है। प्रथम अध्याय में नाट्य की उत्पत्ति का विस्तृत वर्णन किया गया है कि ब्रह्मा जी ने ऋग्वेद से पाठ्य (संवाद) , सामवेद से गीत, यजुर्वेद से अभिनय और अथर्ववेद से रस , चारों वेदों से सामग्री लेकर नाट्यवेद की रचना की।

**जग्राह पाठ्यमृग्वेदात्सामभ्यो गीतमेव च ।**

**यजुर्वेदादभिनयान्त्रसानाथर्वणादपि।।1**

## 2. लेखकत्व और ऐतिहासिक संदर्भ:

भरत मुनि, भारतीय सांस्कृतिक इतिहास में एक प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। हालाँकि, उनके बारे में ऐतिहासिक विवरण अस्पष्ट हैं, और उनकी समय सीमा के बारे में विद्वानों के बीच बहुत अटकलें और बहस है। हालाँकि नाट्य शास्त्र स्वयं ठोस ऐतिहासिक संदर्भ प्रदान नहीं करता है, लेकिन माना जाता है कि इसकी रचना उस काल में हुई थी जब भारतीय सभ्यता बौद्धिक और सांस्कृतिक रूप से फल-फूल रही थी। यह समय सीमा आम तौर पर 100 ई.पूर्व से 300 ई.के बीच रखी जाती है,**2** हालांकि कुछ विद्वानों का सुझाव है कि यह इससे भी पहले हो सकती है। इस युग के दौरान, भारत ने दर्शन, साहित्य, कला और विज्ञान सहित विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण विकास का अनुभव किया। नाट्यशास्त्र इस समृद्ध सांस्कृतिक परिवेश में उभरा, जो प्राचीन भारत में प्रचलित सौंदर्यशास्त्र,

प्रदर्शन और आध्यात्मिकता की परिष्कृत समझ को दर्शाता है। सामाजिक रीति-रिवाजों, कलात्मक प्रथाओं और दार्शनिक अवधारणाओं के संदर्भ शामिल हैं जो अपने समय के सांस्कृतिक संदर्भ में अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं। यह प्रदर्शन कलाओं की पुरानी परंपराओं पर भी आधारित है, जो सदियों से कलात्मक अभिव्यक्ति और नवीनता की निरंतरता का सुझाव देती है। सटीक ऐतिहासिक विवरणों की कमी के बावजूद, भरत मुनि और नाट्य शास्त्र भारतीय प्रदर्शन कला के इतिहास में एक केंद्रीय स्थान रखते हैं, जो मूलभूत ग्रंथों के रूप में कार्य करते हैं जो आज भी कलाकारों और विद्वानों को प्रेरित और मार्गदर्शन करते हैं।

### 3. भारतीय संस्कृति में नाट्यशास्त्र का महत्व :

भरत मुनि के नाट्यशास्त्र में विभिन्न विषयों का वर्णन है। भरत मुनि ने स्वयं कहा भी हैं कि विश्व में ऐसा कोई ज्ञान नहीं, ऐसी कोई शिल्प नहीं ,ऐसी कोई विद्या नहीं, ऐसी कोई कला नहीं, ऐसा कोई योग व कर्म नहीं जो इस नाट्य में दिखाई ना पड़ता हो।

**न तज्ज्ञानं न तच्छिल्पं न सा विद्या न सा कला ।**

**न स योगो न तत्कर्म यन्नाट्येऽस्मिन् न दृश्यते ।।3**

नाट्यशास्त्र कई कारणों से भारतीय सांस्कृतिक संदर्भ में अत्यधिक महत्व रखता है:

विश्व के इतिहास में ऐसा कोई ग्रंथ उपलब्ध नहीं होता जिसमें नाट्य कला पर इतने विस्तार ,स्पष्टता और सूक्ष्मता के साथ विचार किया गया हो । नाट्यशास्त्र का महत्व इससे और भी अधिक बढ़ गया है क्योंकि इसमें नाट्य कला के साथ-साथ नृत्त, नृत्य, गीत, वाद्य, रस ,अलंकार, छंदोविचिति तथा भाषा आदि विविध विषयों का भी विवेचन किया गया है । परवर्ती (बाद के) काव्यशास्त्र, रसशास्त्र और नाट्यशास्त्र के आचार्यों के लिए तो यह एक महत्वपूर्ण ग्रंथ बनकर उभरा है।

मूलभूत पाठ के रूप में :- यह ग्रंथ प्रदर्शन कलाओं पर सबसे शुरुआती और सबसे व्यापक ग्रंथों में से एक है, जिसमें नाटक, नृत्य और संगीत शामिल है। इस प्रकार, यह भारतीय शास्त्रीय कलाओं के लिए एक मूलभूत पाठ के रूप में कार्य करता है, जो कलाकारों, संगीतकारों और निर्देशकों के लिए दिशानिर्देश और सिद्धांत प्रदान करता है।

परंपरा का संरक्षण: नाट्य शास्त्र ने प्राचीन कलात्मक प्रथाओं को संरक्षित और संहिताबद्ध करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसने मंच डिजाइन, मुद्राओं, भावनाओं (रस), और संगीत संगत सहित प्रदर्शन के विभिन्न तत्वों को मानकीकृत किया, जिससे भविष्य की पीढ़ियों तक उनकी निरंतरता और प्रसारण सुनिश्चित हो सके।

आध्यात्मिक और दार्शनिक अंतर्दृष्टि: यह पाठ कला के दार्शनिक और आध्यात्मिक आयामों पर भी प्रकाश डालता है। यह रस की अवधारणा, दर्शकों में उत्पन्न सौंदर्य अनुभव की पड़ताल करता है, और आध्यात्मिक ज्ञान और भावनात्मक परिवर्तन में कला की भूमिका पर चर्चा करता है।

सांस्कृतिक पहचान: नाट्य शास्त्र भारतीय सांस्कृतिक विरासत की विविधता और समृद्धि को दर्शाता है। यह प्राचीन भारत के बहुसांस्कृतिक ताने-बाने को प्रदर्शित करते हुए विभिन्न क्षेत्रीय परंपराओं के तत्वों को एकीकृत करता है। इस प्रकार, यह पूरे उपमहाद्वीप में सांस्कृतिक पहचान और एकता के प्रतीक के रूप में कार्य करता है।

प्रभाव और अनुकूलन: नाट्य शास्त्र में उल्लिखित सिद्धांत भारतीय प्रदर्शन कलाओं के विभिन्न रूपों में व्याप्त हैं, जिनमें भरतनाट्यम, कथक, ओडिसी और कथकली जैसे शास्त्रीय नृत्य रूपों के साथ-साथ शास्त्रीय संगीत और रंगमंच भी शामिल हैं। यहां तक कि समकालीन कलाकार भी अक्सर इसकी शिक्षाओं से प्रेरणा लेते हैं, उन्हें आधुनिक संदर्भों में ढालते हैं।

विद्वानों का अध्ययन: भारतीय कला, संस्कृति और सौंदर्यशास्त्र के विद्वानों द्वारा नाट्य शास्त्र का अध्ययन और विश्लेषण जारी है। प्रदर्शन, भावना और कहानी कहने की प्रकृति में इसकी गहन अंतर्दृष्टि ने व्यापक टिप्पणी और व्याख्या को जन्म दिया है।

संक्षेप में, नाट्य शास्त्र भारतीय सांस्कृतिक परिदृश्य में एक केंद्रीय स्थान रखता है, जो कलाकारों के लिए एक कालातीत मार्गदर्शक, विद्वानों के लिए प्रेरणा का स्रोत और कलात्मक अभिव्यक्ति की स्थायी शक्ति का एक प्रमाण है।

### 4. सैद्धांतिक ढांचा :

नाट्य शास्त्र की सैद्धांतिक रूपरेखा में अवधारणाओं और सिद्धांतों की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है जो भारतीय शास्त्रीय प्रदर्शन कलाओं को रेखांकित करती है। यहां कुछ प्रमुख तत्व दिए गए हैं:

नाट्यवेद: नाट्य वेद को पंचम वेद भी कहा जाता है। नाट्यशास्त्र नाट्यवेद की अवधारणा का परिचय देता है, जो प्रदर्शन का ज्ञान है। यह इस ज्ञान को चार मुख्य शाखाओं में विभाजित करता है: नाटक (नाटक), नाट्य (नाटक की कला), नृत्य (नृत्य), और संगीत (संगीत)।

जग्राह पाठ्यमृग्वेदात्सामभ्यो गीतमेव च ।यजुर्वेदादभिनयान्रसानाथर्वणादपि।।4

रस: रस का तात्पर्य उस सौंदर्य सार या स्वाद से है जो किसी प्रदर्शन के दौरान दर्शकों में उत्पन्न होता है।

**विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद् रस निष्पत्तिः।5**

भरत मुनि ने सर्वप्रथम रस निष्पत्ति का वर्णन किया है। उनके अनुसार विभाव, अनुभाव और व्यभिचारी भावों के सहयोग से रस की निष्पत्ति होती है। नाट्य शास्त्र आठ प्राथमिक रसों की पहचान करता है: श्रृंगार (प्रेम), हास्य (हँसी), करुण (करुणा), रौद्र (क्रोध), वीर (वीरता),भयानक(भय), बिभत्स (घृणा), और अद्भुत (आश्चर्य)। ये रस कला के भावनात्मक अनुभव के लिए मौलिक हैं।

**श्रृङ्गार-हास्य-करुण-रौद्र -वीर-भयानकाः।**

**वीभत्साद्भुतसंज्ञौ चेत्यष्टौ नाट्ये रसाः स्मृताः।।6**

भाव: भाव से तात्पर्य कलाकारों द्वारा उनके भावों, हावभावों और गतिविधियों के माध्यम से प्रदर्शित भावनात्मक अवस्थाओं से है। नाट्यशास्त्र नौ स्थायी भावनात्मक अवस्थाओं (स्थयी भाव) और 33 अस्थायी भावनात्मक अवस्थाओं (व्यभिचारी भाव) की रूपरेखा देता है, जो एक साथ रस के उद्भव में योगदान करते हैं।

अभिनय: अभिनय प्रदर्शन का अभिव्यंजक पहलू है, जिसमें हावभाव (मुद्रा), चेहरे के भाव (भाव), और शारीरिक गतिविधियां शामिल हैं। नाट्य शास्त्र अभिनय को चार प्रकारों में वर्गीकृत करता है: अंगिका (शरीर के हावभाव और गतिविधियाँ), वाचिका (संवाद और गीत सहित मौखिक अभिव्यक्ति), आहार्य (पोशाक, श्रृंगार और सहारा), और सात्विक (भावनात्मक या मनोवैज्ञानिक अवस्थाएँ)।

नृत्त और नृत्य: नाट्य शास्त्र नृत्त के बीच अंतर करता है, जो किसी भी भावनात्मक सामग्री से रहित शुद्ध नृत्य आंदोलनों को संदर्भित करता है, और नृत्य, जो एक कथा को व्यक्त करने या भावनाओं को जगाने के लिए अभिव्यंजक तत्वों के साथ नृत्य को जोड़ता है।

ताल और लय: ताल लयबद्ध चक्र को संदर्भित करता है, जबकि लय गति या गति को संदर्भित करता है। नाट्य शास्त्र विभिन्न तालों और लयों का विस्तृत विवरण प्रदान करता है, जो संगीत और नृत्य में उनकी संरचनाओं और अनुप्रयोगों को रेखांकित करता है।

रंगभूमि: नाट्यशास्त्र नाट्य स्थान (रंगभूमि) के लेआउट और डिजाइन पर चर्चा करता है, जिसमें मंच की व्यवस्था, दर्शकों के बैठने की व्यवस्था और पर्दे और पृष्ठभूमि का उपयोग शामिल है।

गंधर्व वेद: नाट्यशास्त्र को संगीत और प्रदर्शन कला की प्राचीन भारतीय परंपरा गंधर्व वेद का एक हिस्सा माना जाता है। इस प्रकार यह प्रदर्शन कलाओं को व्यापक ब्रह्माण्ड संबंधी और दार्शनिक अवधारणाओं से जोड़ता है। कुल मिलाकर, नाट्यशास्त्र सौंदर्य सिद्धांतों, तकनीकी पहलुओं और आध्यात्मिक आयामों को शामिल करते हुए भारतीय शास्त्रीय प्रदर्शन कलाओं को समझने और अभ्यास करने के लिए एक व्यापक सैद्धांतिक ढांचा प्रदान करता है।

संक्षेप में, इस प्राचीन ग्रंथ का न केवल भारतीय शास्त्रीय प्रदर्शन कलाओं पर बल्कि भारत के व्यापक सांस्कृतिक और दार्शनिक परिदृश्य पर भी गहरा प्रभाव पड़ा है। अभिनय कला के विभिन्न क्षेत्रों में कलाकारों, विद्वानों और अभ्यासकर्ताओं द्वारा आज भी इसका अध्ययन, व्याख्या और अनुप्रयोग जारी है।

## सन्दर्भ :

1. **नाट्यशास्त्र**, 1.7
2. **संस्कृत साहित्य का इतिहास**, **डॉ उमाशंकर शर्मा ऋषि**
3. **नाट्यशास्त्र**, 1.116
4. **नाट्यशास्त्र**, 1.7
5. **नाट्यशास्त्र**, 6.12
6. **काव्य प्रकाश**, 4.29